संदर्भ सूचि

	लेखक	ग्रंथ	पृष्ठ
१	डॉ.सुनिलकुमार लवटे	यशपाल एक समग्र मूल्यांकन	७० ।
२	वही	वही	७८ ।
३	यशपाल	अमिता	पृ.२२०।
४	वही	वही	२२१।
५	वही	वही	२२२।

तृतीय अध्याय

अमिता उपन्यास की कथावस्तु --

उपन्यास के अंग एवं रचना-विधि निम्नलिखित प्रकार से हैं ।

१) कथानक ।

२) चरित्र-चित्रण ।

३) कथोपकथन ।

४) देशकाल या वातावरण ।

५) शैली ।

६) उद्देश्य ।

१) कथावस्तु --

उपन्यास का मूल कथानक ही है । उपन्यास में व्याप्त कुतूहल का तत्व कथानक के सहारे ही विकास पाता है । उपन्यास का समग्र रूप कथानक के ढाँचे परही विकसित होता है । कथानक के संदर्भ में डॉ.भगीरथ मिश्र जी कहते हैं --

" कथानक के समस्त अंगोंका सुन्दर संगठन ,घटनाओंका समुचित विन्यास उपन्यास को सुन्दर बनाने के लिए आवश्यक होता है । कार्यकारण की शृंखला को ध्यानमें रखते हुये कुतूहल को तीव्र बनाते चलना उपन्यास में रोचकता का प्राण है । फिर भी वह कुतूहल इस प्रकार का नहीं होना चाहिए कि प्रस्तुत वर्णन में पाठक का मन न रमे ।" [१]

कथानक को प्रमुख तीन भागों में विभाजित किया जाता है ।

१) प्रारम्भ या प्रस्तावना ।

२) मध्य या विकास ।

३) समाप्ति या अंत ।

इस सभी बातों के साथ-साथ डॉ.भगीरथ मिश्र जी ने उत्कृष्ट कथानक होने के लिए उसकी विशेषतायें भी आवश्यक मानी हैं। जैसी --

१) मौलिकता ।

२) प्रबंध-कौशल ।

३) संभवता ।

४) सुगठन ।

५) रोचकता ।

१) मौलिकता -- " जिस कथानक में पाठक परिणाम तथा आगामी घटना का आभास न पा सके,उस कथानक को मौलिक कहना चाहिए ।"[२]

२) प्रबन्ध-कौशल --" कथानक की मुख्य और गौण कथाओं को औचित्य और प्रभाव के साथ संगठित करने की चतुराई प्रबन्ध कौशल है ।"[३]

३) संभवता -- उपन्यास में जो कुछ भी वर्णन है, वह सम्भव हो असम्भव नहीं।[४]

४) सुगठन -- " प्रबन्ध कौशल के साथ-साथ समस्त उपन्यास एक सुगठित रचना होनी चाहिए ।"[५]

५) रोचकता -- कथानक की रोचकता उपर्युक्त बातोंका ध्यान रखने से आपही आप आ जाती है। इसे कहीं से ले आने की जरूरत नहीं होती ।

उपर्युक्त सभी विशेषताओंके होते हुये भी उपन्यास किस प्रकार का है या कथावस्तु किस प्रकारकी है यह बताना चाहिए ।

स्वरूप,विषय उपन्यास-तत्वों के सापेक्षिक महत्व कथा-निवेदन की पध्दति आदि की दृष्टिसे उपन्यासों के अनेक प्रकार होते हैं। तत्वोंके सापेक्षिक महत्व के आधारपर उपन्यास के प्रकार निम्नलिखित --

१)   घटना-प्रधान ।

२)   चरित्र प्रधान ।

३)   उद्देश्य प्रधान ।

कथावस्तु में तथ्यों की सत्यता को सामने रखकर हम उपन्यासोंको दो वर्गों में विभाजित कर सकते हैं ।

१)   कल्पना प्रधान ।

२)   वास्तविकता प्रधान ।

विषय की दृष्टिसे उपन्यास के अनेक भेद होते हैं जैसे -- सामाजिक, राजनीतिक,वैज्ञानिक,मनोवैज्ञानिक,और आँचलिक ।

शैली की दृष्टिसे उपन्यास के भी प्रकार होते है जैसे -- वर्णनात्मक, नाटकीय,आत्म-कथात्मक,पत्रात्मक और डायरी शैली । उपन्यास के इतने भेद होते है, कि एक सामान्य आधार मानकर सभी उपन्यासोंका वर्गीकरण नहीं हो सकता । डॉ.भगीरथ मिश्र जी कहते हैं --

> "There are so many varities of Dovel that it is hard to find for them all a common critical denominator.And there are other kinds of Narrative,Which shade into the Novel,So artfully that it is difficult to know where to draw the line."5

ऐतिहासिक उपन्यास को भी विभिन्न वर्गोंमें विभाजित किया जाता है ।

१)   युग-प्रतिनिधि --

युग प्रतिनिधि उपन्यास इतिहास के विस्तृत युग का चित्र उपस्थित करने का प्रयत्न करता हैं । इसमें लेखका अपना कोई न कोई उद्देश्य होता है क्योंकि अधिकांश सामग्री कल्पित होती हैं ।

२) व्यक्ति-प्रतिनिधि --

विस्तृत ऐतिहासिक व्यक्तियोंका कल्पनात्मक वर्णन करता है।

३) अंतिरंजित -

उपन्यास में ऐसी घटनाओं या पात्रों को समाविष्ठ किया जाता है जिनका उल्लेख इतिहास में मिलता है, पर उन्हें अतिरंजित रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

ऐतिहासिक उपन्यासकार इतिहास के कंकाल में मांस और रक्त का संचार करने के लिए उपन्यास लिखते हैं। विशुध्द ऐतिहासिक उपन्यास का उद्देश्य सिर्फ मनोरंजन नहीं होता। इतिहास का ज्ञान प्रदान करना, भ्रांतियों का निवारण करना होता है। ऐतिहासिक उपन्यास के गौण पात्र एवं प्रासंगिक कथा-सूत्र लेखक की कल्पना का ही प्रतिफल होते हैं।" [६]

अमिता की कथावस्तु --

अमिता एक ऐतिहासिक, कल्पना प्रधान उपन्यास है। यशपालने अमिता के प्राक्कथन में स्पष्ट कर दिया है, कि दिव्या के कथानक की भाँति अमिता की कहानी भी इतिहास नहीं, ऐतिहासिक कल्पना है।" [७]

'अमिता' शीर्षक नायिका बालिका द्वारा असीमित राज्य की चाह करनेवाले सम्राट अशोक को चित्रित करनेवाले अपने अभिन्न रूप का द्योतक है। उपन्यास का सर्वस्व 'अमिता' है, यह तो उपन्यास के शीर्षक के बारे में सच्ची है।

'अमिता' उपन्यास की प्रामाणिक घटना केवल अशोक का कलिंग विजय के लिए आक्रमण और उस युध्द के परिणाम में अशोक का भविष्य में युध्द न करने की प्रतिज्ञा कर लेना ही है। इस काल्पनिक प्रसंग का उतना अंश ही इतिहास है। 'कलिंग विजय' भारतीय इतिहास की एक प्रसिध्द घटना है। अशोक के हृदय परिवर्तन के अनेक कारण हो सकते हैं, लेकिन यशपाल ने उनमें से एक कारण

की अनुपम कल्पना की है। बच्चे शांति के प्रतिक होते हैं और उनके प्रभाव से लोटे की कठोर शृंखलाओं को सहज में तोड देनेवाले भी रेशम के बंधनों में बंध जाते हैं।" 8

कलिंग महाराज कुमारी युवराज्ञी अमिता कलिंगराज करवेला की बेटी है। मगध अशोक राज्यविस्तार की लिप्सा से कलिंग पर आक्रमण करता है। उस आक्रमण का मुकाबला करने के लिए कलिंगराज करवेल के अपनी विशाल सेना के साथ निकलने के एक ही दिन पहले महारानी नन्दा कन्यारत्न को जन्म देती है। इस विशेष समयपर पुत्री-जन्म को राज्य ज्योतिषी शुभ मानते हैं तथा नवजात शिशु को अमित वैभव तथा अमित गुणों की देवता मानते हैं अत: `अमिता` नाम से नामकरण किया जाता है। राज्य ज्योतिषी के घोषित भविष्य के अनुसार राजा करवेल विजय प्राप्त करता है पर युध्द में घायल होने के कारण कई दिनों के बाद परलोक सिधारता है। महाराज की इच्छा के अनुसार `अमिता` को राज्य की उत्तराधिकारी बनाया गया।

महाराज की मृत्यु से महारानी नन्दा कर्तव्यपालन के विचार से युवराज्ञी और राज्य का संवलन तो करती थी लेकिन वह संसार से पूर्णतया विरक्त थी इस संसार को दु:ख का कारण मानकर शान्ति-प्राप्ति के लिए वे बौध्द धर्म की ओर आकृष्ठ होती हैं। क्रमश: बौध्द धर्म का प्रभाव उनके तन-मन तथा शरीरपर होता है। महारानी नन्दा का मूल धर्म किसी से छीनो मत, किसी को ठगाओ मत, किसी को मारो मत हो गया। राजकुमारी `अमिता` पर भी इस विचारोंका असर दिखाई देता है।

पराजित होकर भी सम्राट अशोक की सत्ता की प्यास बुझि नहीं थी वह दुबारा कलिंगपर आक्रमण करता है। छ: वर्ष बाद पूर्ण समर की तैयारी कर अपार सेनावाहिनी के साथ मगध सम्राट अशोक के आक्रमण का समाचार जब कलिंग में आया तो गांव को उजाडकर राजप्रसाद बनाये जाने की योजना आचार्य सुकंठ शर्मा तथा महासेनापति आर्य भद्रकीर्ति ने बनायी, किन्तु गाँव की प्रजा को महारानी ने अभयदान दिया। रानी का आदेश को न मानकर युथप अपने

अधिकार में ग्राम उजाड़ा जाने लगा तो अमिता वहाँ अचानक पहुँच जाती है और वह बालसुलभ भोलेपन से सेनानायक युथप को बन्दी बनाकर महारानी नन्दा के सामने उपस्थित करती है। यहा अमिता का बालहठ दिखाई देता है। युथप उस घटना से बहुत क्षुब्ध होता है।

राजकुमारी अमिता की दासी हिता योजो श्रेष्ठि विठ्ठल के दास मोद से प्रेम करती थी। उस समय दासों को खुलकर स्वतंत्र रूपमें कुछ करने का अधिकार नहीं था इसीवजह से हिता छिपछिपाकर मोद से मिलती है। राजकुमारी के खेलने के लिए गुड़िया लाने के बहाने मोद से मिलती थी। हिता और अमिता दोनों एक दूसरे का बहुत ध्यान रखती थी।

अशोक के आक्रमण से रक्षा। पतिरोध के मिमित्त कलिंग में बड़ी संख्या में पशु-बली दी जानेवाली थी और उसी समय समारोह करके नागरीकोंको युध्द के लिए उत्साहित करने का कार्य कलिंग के कर्णधारों ने जारी किया था। किन्तु दक्ष महारानी नन्दा के कारण ऐसा सम्भव नहीं सका। आचार्य सुकंठ एवं महासेनापति मद्रकीर्ति अशोक सम्राट से लड़ने के लिए तैयार थे लेकिन महारानी नन्दा को यह पसन्द नहीं था। उस समय महारानी विहार के महास्यविर जीवक के कथनानुसार चल रही थी और चमत्कार लालसा उसे पैदा हो गयी थी। रानी का यह विचार था कि युध्द करने के लिए आपको जरूरी नहीं है।

विहार के भिक्षुओं की और अधिकारीयोंकी ख्याती समाज में बहुत थी। भिक्षुओंको बहुत सम्मान दिया जाता था, एक दिन ऐसा हुआ कि मुख्य मार्ग से स्थविर आनन्द लौट रहा था तो मदिरा से उन्मत नागरिकोंने पहले की तरह उसका स्वागत नहीं किया। इस घटना से ,अपमान से विचलित हो विहार के अधिकारियों से मंत्रणा कर उसने अपने उपवास की घोषणा की भिक्षा लेना बंद किया। इस घटना की खबर जब नन्द उपयोगी वस्तुओंको भिक्षा एकसौ एक बहँगियों के लेकर विहार में -बिहार में पहुँचती है तब मिलती है महास्थविर जीवक ने राजमाता से कहा -- " भन्ते, नगर में बलि हिंसा की योजनाओं का ही यह कुप्रभाव है।"[९] जीवक ने यह भी बताया कि बलि और हिंसा न करने की तत्काल घोषणा राज्य द्वारा होती चाहिए। तभी स्थविर आनन्द अन्न ग्रहण करेगा और उसी

दिन अर्धरात्रि को उसने महारानी को विहार में आकर चमत्कार दर्शन करने की प्रेरणा भी दी । नगर में पहुँचते ही महारानी की आज्ञा से पशु-बलि और हिंसा बन्द कर दी गई । इस घटना से राज्य में बहुत क्षोभ उत्पन्न हुआ । इतना तो नहीं आचार्य सुकंठ शर्मा और महासेनापति आर्य भद्रकीर्ति को भी अत्यन्त क्रोध आया और इसी प्रतिशोध में उन्होंने एक योजना बनाकर अर्धरात्रि को बिहार जाते समय महारानी नन्दा को श्री दुर्ग में बन्दी बनाया गया । और अपने ध्येय की पूर्ति करने में वे मग्न हो गये । ये सभी लोग महारानी तीर्थ के लिए गयी है, ऐसाही बताते थे ।

बालिका अमिता अपनी माँ की बराबर खोज करने लगी । नगर सेठ सौमित्र के भड़काने पर हिता राजकुमारी को माँ से मिलाने के लिए उत्साहित किया करतीथी । हिता महारानी के सेवा में रहनेवाली एक दासी से पता लगाकर हिता राजकुमारी को लेकर वहाँ पहुँच जाती हैं । बुध्दीवादी हिता अपनी स्वयं की इच्छा पूर्ति और अमिता को माँ से मिलाना ये दोनों ध्येय उन्हें वहाँ ले जाते हैं । आखिर महारानी नन्दा एवं राजकुमारी अमिता दोनों को एकसाथ राजप्रसाद में लाया गया । उसी समय सम्राट अशोक बढते बढते राजमहल के मुख्य द्वार तक आ गये थे । महारानी नन्दा एवं राजकुमारी अमिता को वहाँ से हटा देने की कोशिश करने लगे किन्तु महारानी अडिग विश्वास से वचन पाठ करती हुई महास्थविर जीवक द्वारा भगवान के चमत्कार की रक्षा पाने की प्रतिक्षा कर रही थी । महारानी प्रजाहित देखती है तो अमिता कहती है यह अशोक दुष्ठ है, हम उन्हें शिक्षा देंगे जब सम्राट अशोक निरागस अमिता के सामने आता है तो उसे कहती हैं, सुनो तुम कौन हो ,तुम बहुत सुन्दर हो ... तुम्हारे वस्त्र बहुत सुन्दर है । तुम्हारा खड्गबहुत सुन्दर है । तुम हमारे साथ आओ हम चंडअशोक को बाँधने जा रहे हैं ।[१०] अमिता अपने हाथ में थामी कुत्ते की साँकल अशोक दिखाती हैं । अशोक निश्चल और मौन अमिता को देखता रहा ।

अशोक की मौन मुद्रा की उपेक्षा और अवज्ञा समझकर अमिता उसे कहती है --

` तुम हमारा आदेश नहीं मानोंगे ? हमारा आदेश सबको मानना चाहिए । हम कलिंग की राजेश्वरी है । हम प्रजा की माता है । तुम हमारे साथ आओ, हम अशोक को बांधकर लाये ।'[११] अशोक प्रजा से छीनता है, प्रजा को डराता है, प्रजाको मारता है । विजयी सम्राट फिर मौन रहा । उसकी इस स्थितिका परीक्षण करके अमिता पुछती है --

` अशोक इस बालिका को जबाब देता है -- `सम्राट अशोक '[१३]

यह वाक्य सुनतेही अमिता को आश्चर्य हुआ और वह अचानक बोलो

` तुम अशोक हो ? तुम तो बहुत सुन्दर हो । तुम प्रजा से क्यों छिनते हो ? तुम प्रजा को क्यों डराते हो ? तुम प्रजा को क्यों मारते हो ? तुम्हें क्या चाहिए ।'[१४]

मगध का जगत विजयी सम्राट अशोक बालिका अमिता के सामने मंत्रमुग्ध की भाँति विवश, असहाय और मौन खडा था । सम्पूर्ण पृथ्वी को विजय करने की प्रतिज्ञा करने वाले अशोक ने, एक बालिका के प्रश्न से परास्त होकर अपनी विजय यात्रा अपूर्ण छोड देने के लिए ही दो बार सैन्य दल लेकर कलिंग पर चढाई नहीं की थी । सम्राट ने अपना सम्मोहन दूर करने के लिए अपना मस्तिष्क हिलाया । पलक झापकाकर सोचा और राजसिंहासन की ओर संकेत करके उत्तर दिया --

` हमे कलिंग का राजसिंहासन चाहिए ।'[१५]

अमिता कुछ पल चिन्ता में मौन खडी रही और पुन: बोली --

` अच्छा, तुम माँगते हो तो लो जाओ । .... क्या तुम्हारे पास राजसिंहासन नहीं है ? .... अच्छा तुम इसे ले जाओ, हम दूसरा ले लेंगे ।'[१६]

मगध का सम्राट निश्चल, निर्वाक था । सोना मढे लोहे के कवच से आवृत उसका पाषाण हृदय जो एक लाख से अधिक सैनिकों के रक्त से न भिगनेवाला हृदय उस बालिका के श[ब्द]ों से द्रवित हो गया । अपने हाथ में जो खडग था वह जमीनपर रख दिया और बालिका को गोदमें लिया और कहा ` कलिंग की महारानी, मगध का विजयी सम्राट हार गया तुने विजय पायी । तुम दुष्ठ अशोक को बाँध ने जा रही थी[१७] ।' अशोक ने अमिता के हाथ से लटकती कुले की साँकल अपने गले में डाल ली और बोला --

" कलिंग की महारानी सम्राट अशोक बंध गया । अशोक तुम्हारा बंदी है । अशोक ने जो माँगा वह तुने दिया । अब तुम अशोक से माँगो कलिंग की महारानी आदेश दे क्या चाहती है ।"[१८]

अमिता अशोका का यह वाक्य सूनकर आनंदित होकर उसे एक मंत्ररूपी आदेश सुनाती है --

" किसी से छीनों मत, किसी को डराओ मत, किसी को मारो मत ।"[१९]

अशोक इस आदेश का पालन करता है । कहता है वह किसी से छीनेगा नहीं, किसी को डरायेगा नहीं , किसी को मारेगा नहीं । अब अशोक हिंसा और द्वन्द्व युध्द से विजय की कामना नहीं करेगा । वह कलिंग को विजयी महारानी की भाँति निश्चल प्रेम से संसार के हृदयों को विजय करेगा ।

मुख्य कथा को गति देने के लिए कलाकार मोद और दासी हिता की गौण कथा दी हैं । उपन्यास में बौध्दधर्म का प्रभाव दिखाया गया है । सेठ सौमित्र के पात्र द्वारा व्यापारियों की मनोवृत्ति का चित्रण प्रस्तुत किया है । व्यापारी वर्ग स्वार्थ वश षड्यंत्र करते हैं । दास प्रथा का प्रचलन तथा उत्सव निषेध में माँस मदिरा सम्बन्धी समस्याओंका चित्रण किया है । इस उपन्यास का यही लघु कथानक हैं ।

इस उपन्यास में यशपालजी ने सम्राट अशोक का हृदय परिवर्तन यह घटना नयी दृष्टि से ली हैं । व्यक्ति और समाज के विकास के लिए नैतिक बल की आवश्यकता है, परन्तु नैतिकता विचार और तर्क द्वारा मनुष्य के सहज स्वभाव का अंग होनी चाहिए । भय और दमन द्वारा अपने विचारों तथा नैतीकता को स्वीकार करने के लिए दूसरों को विवश करना अपनी शक्ति अनुभव करने का उन्माद मात्र है और मूलत: अनैतिक है । अत: एक निर्दोष, निष्पाप, सरल बालिका आत्मीयतापूर्ण व्यवहार से अशोक में नैतिक बल जगाने में सफल होती है ।

उपन्यास का कथानक सुगठित है, कही भी विशृंखल नहीं है ।

प्रारंभ --

'अमिता' उपन्यास में यशपालजी ने एक अच्छे कथानक की सृष्टि की है। कथानक का प्रारंभ नाटकीय ढंग से हुआ है। एक आतंकवादी वातावरण दिखाई देता है। कथानक के प्रारंभ में क्या चल रहा है,यह समझा जाता है। लेकिन किस लिए यह आतंक चल रहा है यह स्पष्ट नहीं होता। उपन्यास का प्रारम्भ साधारण घटना से हुआ है।

मध्य --

उपन्यास का मध्य बालक्रीडा,सत्ता-स्पर्धा ,हिंसा,मोद का प्रेम जैसी घटनाओं से रोचक है किन्तु कथा को प्रवाहित करने में वे प्रभावित नहीं होते।

अंत --

कथा का अंत अशोक के हृदय परिवर्तन की घटना से होता है। इस प्रकार चरम सीमा पर कथा खत्म करके कथा को प्रभावशाली बनाया गया है। कथा के अंशो के शीर्षक जिज्ञासा तृप्ति के उपकरण बनकर आए है। घटनाओं के परस्पर सम्बन्ध का जहाँ तक सवाल है ,कहीं भी शिथिलता नजर नहीं आती है। देश के विभिन्न स्थानों पर घटित,घटनाओंका जो चित्रण किया है उसमें सूत्रबध्दता और संगठन कौशल्य देखा जा सकता है।

उपन्यास की कथावस्तु का मूल संदेश यही है।

संभवता --

उपन्यास में किसी से छीने मत,किसीको डराओ मत,किसी को मारो मत। इस वाक्य से संभवता दिखाई देती है।

प्रबंध कौशल --

इस उपन्यास के कथा के शीर्षक जिज्ञासा तृप्ति के उपकरण बनकर खडे हैं। इस उपन्यास में परस्पर संबंध के जो प्रसंग आये है, वे कही भी शिथिल दिखाई

नहीं देते । देश के विभिन्न स्थानोंपर घटित घटनाओं का जो चित्रण किया है, उसमें सुत्रबध्दता और संगठन-कौशल देखा जा सकता है ।

मौलिकता --

इस उपन्यास के मौलिक प्रसंग ` अमिता ` का जन्म, राजा करवेल का युध्द भूमिपर जाना, विजयी होकर आना, अंत, सम्राट अशोक द्वारा दुबारा कलिंग पर आक्रमण यह प्रसंग कथानक को प्रवाहित करते है ।

रोचकता --

इस उपन्यास में रोचकता ` अमित ` द्वाराही निर्माण होती है । यशपालजी ने एक छ: वर्षीय बालिका का चित्रण करके कथानक को सुन्दर और रोचक बनाने का एक साहसी कार्य किया है ।

निष्कर्ष --

उपन्यास की कथावस्तु ऐतिहासिक तथ्यों की बुनियाद पर खडी है । अमिता उपन्यास की कहानी ऐतिहासिक कल्पना है । इतिहास की प्रामाणिक घटना केवल कलिंग विजय करने के लिए अशोक का युध्द करना और इस युध्द के परिणाम में भविष्य में युध्द न करने की प्रतिज्ञा कर लेना ही है । यशपालजी इस ऐतिहासिक घटना के द्वारा हमें वर्तमान से दूर अतीत में ले जाते हैं, एक ओर चंड अशोक तो दूसरी ओर छल प्रपंच रहित पवित्र स्नेह का नैतिक अधिकार रूप अमिता । अनीति के सामने नीति की बुध्दिपक्ष के सामने हृदयपक्ष का विजय ही विश्वशांति का संदेश है । तथा समाज ही सामन्तशाही व्यवस्था में दासोंपर होनेवाले अत्याचारों के आक्रोश को स्वाभाविक रूप से प्रगट किया जा सके । ` अमिता ` द्वारा अशोक के हृदयपरिवर्तन की घटना से संबंधित कथा मुख्य है । हिता मोद की प्रणय कथा, सेठ, सौमित्र का स्वार्थ, महामात्य की सत्तालिप्सा जैसे प्रसंगों से मुख्य कथा का विकास हुआ ।

उपन्यास का मध्य बालक्रीडा, सत्ता, स्पर्धा, हिता-मोद का प्रेम जैसी

घटनाओं से रोचक है। किन्तु गतिशिल नहीं । कथा का अन्त चंड अशोक के हृदय परिवर्तन से होता है । इस प्रकार हम देखते है कि चरम सीमापर कथा समाप्त कर कथा को प्रभावशाली बनाया गया है । कथा में प्रेम के प्रसंग में अमिता और हिता के बिच बहस की कथा को हटा दिया जाय तो स्वाभाविकता में श्रीवृध्दी होती, कथानक के अंशों के शीर्षक जिज्ञासा तृप्ति के उपकरण बनकर आए हैं । घटनाओंके परस्पर संबंध का जहाँतक सवाल है कही भी शिथिलता नजर नहीं आती । कथावस्तु का विषय ऐतिहासिक कथा, काल्पनिक फिर भी लेखक ने ऐसी शैलीका प्रयोग किया है जिससे कल्पना भी इतिहास का आभास दे जाती है । यही उपन्यास की सफलता है । पाठकोतक तत्कालीन वातावरण से सामंजस्य प्रस्थापित करने के लिए लेखक सराहना का पात्र हैं । इस प्रकार `अमिता` उपन्यास की कथावस्तु एक सफल कथावस्तु है ।